Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2022, VOL- 10/74

स्वामी विवेकानंद के सामाजिक और शैक्षिक विचारधारा की वर्तमान प्रासंगिकता का एक समालोचनात्मक अध्ययन

सोमा पाल
(सहायक प्राध्यापिका) श्री रामकृष्ण शारदा आश्रम, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, रविंद्र पथ, हजारीबाग,झारखंड 825301

Paper Received On: 25 DECEMBER 2022

Peer Reviewed On: 31 DECEMBER 2022

Published On: 01 JANUARY 2023

Abstract

स्वामी विवेकानंद भारतीय शिक्षा दर्शन और ज्ञान चेतना के वह नक्षत्र हैं जो ना केवल भारत पर बल्कि पूरी दुनिया में अपने अद्भुत ज्ञान की पृष्ठभूमि से परिचित कराया उन्होंने भारत की गौरान्वित परंपरा को कायम करते हुए समय-समय पर अपने ज्ञानात्मक विचारधारा को संपूर्ण विश्व के सामने लाने का प्रयास किया, और उनके विचारों से ना केवल सनातन संस्कृति बल्कि संपूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति का एक नया प्रचार प्रसार अपने स्तर से करने का कार्य किया। स्वामी विवेकानंद जी ने भारतीय दर्शन को जीवंत एवं व्यवहारिक बनाने के लिए हर स्तर पर अपने विवेक और सकारात्मक विचारधारा को आगे लाने का प्रयास किया। आज के दौर में जब संपूर्ण विश्व भूमंडलीकरण,उदारीकरण, हिंसा और अशांत जैसे वातावरण में चल रहा है। समाज में कटूता, आहिंसा,धार्मिक,कट्टरवाद, क्षेत्रवाद, संप्रदायवाद,भाषावाद इत्यादि तरह के विवादों से चल रहा है। ऐसी स्थिति में हमें भारतीय संस्कृति के एक ऐसे मनीषी का चिंतन मनन पर बल देना होगा, जो शायद इस अराजकता के दौर में भी शांति की बात करता हो, और ऐसे में स्वामी विवेकानंद जैसा दूसरा कोई दार्शनिक व्यक्तित्व जो धर्म अध्यात्म शिक्षा समाज तथा व्यक्तित्व के समस्त पहलुओं को अपने में समेट कर एक संपूर्ण समाज की परिकल्पना करता हो। उसके विचारधारा में आत्म चिंतन, वेद, गीता तथा धर्म किसी के जीवन का आधार मानते हुए उसके महत्व को स्पष्ट किया गया हो तथा संपूर्ण जनमानस को इसका अनुसरण करने के लिए वैचारिक प्रेरणा का कारण बनता हो ऐसे सर्वभोमिक व्यक्तित्व को इस शोध पत्र में व्याख्यापित करने का प्रयास किया जा सकता है

मुख्य शब्दः *अराजकता, वैचारिक, संस्कृति, वैचारिक संस्कृति, संस्कृति, सार्वभौमिक, व्यक्तित्व भूमंडलीकरण व्यावहारिक, अध्यात्म,*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

भारत में भूमंडलीकरण के इस दौर में यह बदलाव जबकि संपूर्ण विश्व निजीकरण, उदारीकरण, हिंसा तथा अशांति क्षेत्रवाद, संप्रदायवाद तथा धर्म की पराकाष्ठा से जूझ रहा है। कट्टरवाद वैमनस्य का बोलबाला हो ऐसे में भारतीय संस्कृति में किसी आध्यात्मिक विचारधारा के पोशक के रूप में अपनी पहचान बनाने वाले किसी एक व्यक्ति का चुनाव करना पड़ेगा जिसने पूरी जिंदगी अपने विचारों धर्म की सिद्धियों तथा एक विकासात्मक स्वरूप को आगे ले जाने का कार्य करने वाले व्यक्तित्व का चयन करना ही होगा।

भारत में समय-समय पर अनेक दार्शनिक तथा सामाजिक विचार को ने अपने विचारों केबल पर संपूर्ण समाज में एक नवीन चेतना का संचार करने का कार्य किया। जिसमें रामकृष्ण परमहंस, स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे मनीषियों ने एक सुधारात्मक युग का सूत्रपात किया। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए स्वामी विवेकानंद का नाम भी एक युग दृष्टा के रूप में जाना जाता है। इन्होंने समय और परिस्थितियों को समझते हुए भारत में नव निर्माण तथा राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का एक प्रयास किया इसमें उन्होंने भारतीय दर्शन को जीवंत और व्यावहारिक रूप में प्रचारित करने के साथ-साथ सामाजिक सुधार की चेतना को भी आगे बढ़ाने का निश्चय किया। वह युग अंग्रेजी शासन का था एक तरह से भारतीय मानसिक चेतना को दबाकर रखा गया था। स्वामी विवेकानंद जी ने अपने नव

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भारत के निर्माण के क्षेत्र में अपने परिवर्तित परिष्कृत स्वरूप की आवश्यकता पर बल दिया। और इनके दार्शनिक चिंतन तथा विचारधारा को समझने का एक प्रयास इस शोध पत्र के माध्यम से किया गया है।

शिक्षा की परिभाषा देते हुए स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है कि, शिक्षा मात्र सूचना प्राप्त करने का आधार नहीं है बल्कि अनेक प्रकार की अतार्किक जानकारियों को मस्तिष्क में भर देने से कोई लाभ नहीं है। डिग्री प्राप्त करना शिक्षा नहीं हो सकती, बल्कि शिक्षा का मतलब संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करना है।

इसी प्रकार स्वामी विवेकानंद जी ने शिक्षा का वास्तविक मतलब बालक की अंतर्निहित शक्तियों का बाहर की तरफ प्रकटीकरण ही शिक्षा बताया। उन्होंने कहा है कि मात्र पुस्तक की तथा स्कूली शिक्षा से व्यक्तित्व का विकास नहीं हो सकता। हमारा लक्ष्य वह शिक्षा है। जिससे बालक का न केवल चरित्र निर्माण हो, बल्कि उसका मनोबल बौद्धिक विकास व्यक्तिगत विकास तथा आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में उसको उचित बल मिल सके। इतना ही नहीं इसके लिए शैक्षिक विचारों को वर्तमान समय में परिस्थिति के अनुसार आत्मसात करने तथा उससे जरूरी उपदेश और बदलाव की दिशा में निरंतर पत्र प्रदर्शन का कार्य स्पष्ट होना चाहिए।

विश्व के दर्शन के इतिहास में इस बात का प्रमाण है कि, जब जब कभी भी ज्ञान में बदलाव की आवश्यकता महसूस हुई है इसमें दार्शनिक विचारधारा से जुड़े लोगों ने अपना संपूर्ण जिम्मेदारी को कारगर ढंग से निर्वहन किया है। भारत का इतिहास और साहित्य इस बात का ऋणी है कि, इसको धार देने का कार्य इन दार्शनिक विचारको ने किया स्वामी विवेकानंद जी के विचारों पर वेद और उपनिषद की गहरी छाप थी। इन्होंने दार्शनिक कृतियों विशेषकर उपनिषद के इस छांदोग्य श्वेतांबर कठोपनिषद तथा मुंडक उपनिषद का उद्धरण के रूप में प्रयोग किया है।

वृहद आरण्यक उपनिषद की उद्घोषणा ,**संमत्र हि ब्रह्मा.** अर्थात ब्रह्म ही सत्य है, इसको विवेकानंद जी ने भी एकमात्र सत्र सत्य के रूप में स्वीकार किया है। ब्रह्मा की सत्ता नित्य असीम तथा अनंत है। उसे वह शक्ति तथा जगत में किसी भी रूप में खोज पाना संभव नहीं है। अतः स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार अनंत की खोज अनंत में ही की जाना चाहिए। हमारी अंतरमुखी आत्मा ही एकमात्र अनंत है। इसलिए उसमें ब्रह्म की खोज की जा सकती है। कठोपनिषद के उद्धरण के माध्यम से स्वामी विवेकानंद जी ने स्पष्ट किया है कि, बल बुद्धि मनुष्य तथा बाहरी भौतिक संसाधनों से युक्त वस्तुओं के पीछे व्यक्ति आजीवन दौड़ता रहता है, परंतु सत्य की खोज की अंतिम इच्छा नहीं पूरा हो पाती है। स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार बाल बुद्धि मनुष्य जिस प्रकार एक ही जगत तथा अग्नि में प्रविष्ट होकर ब्रह्मा वस्तु के भेद के रूप से भिन्न भिन्न रूप धारण कर लेती है, और ऐसे में एक और उदाहरण के माध्यम से स्वामी विवेकानंद ने बताया कि एक ही बार जगत में प्रविष्ट होकर नाना प्रकार के वस्तुओं के भेद से वस्तुओं के अनुरूप को धारण करती है, तथा वस्तु के बाहर विद्यमान रहती है।

विवेकानंद जी आत्मा और परमात्मा में किसी भी प्रकार के भेद को सही नहीं मानते। उन्होंने इस भेद को उदाहरण के माध्यम से बताया कि एक पेड़ पर दो पक्षी बैठे हैं, जिसमें से एक शांति स्थिर और भव्य है तथा नीचे रहने वाला जीव आत्मा विभिन्न प्रकार के फल का भोग कर रहा है स्वामी जी उसी विचारधारा को मनका प्रदान करते हैं।

डॉ.वी.एस.नरवडे के अनुसार, विवेकानंद उपनिषद और गीता के अच्छे ज्ञाता थे। वह बौद्ध और जैन साहित्य के पंडित थे। उनके पात्रों में भवभूति और कालिदास के उद्धरण समान रूप से मिलते हैं। वही उनके विचारों के संदर्भ में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने भी अपना विचार स्पष्ट किया है।

स्वामी विवेकानंद वह भारत का समुद्र है। जिसमें धर्म राजनीति राष्ट्रीयता अंतर्राष्ट्रीय अवबोध उपनिषद तथा विज्ञान के सार्थक तत्व सभी समाहित रहते हैं। दार्शनिक चिंतन पर अपना विचार स्पष्ट करते हुए स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था उपनिषदों का प्रत्येक पृष्ठ मुझे शक्ति का संदेश देता है। उपनिषदों का यह वाक्य है। मानव तेजस्वी बनो विद्वान बनो विशेष रूप से स्मरण करने योग्य है। समस्त जीवन में मैंने इस सूत्र से बहुत बड़ी शिक्षा प्राप्त की है , तथा अपनी उर्जा में वृद्धि की है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

श्रीमद् भागवत के अनुसार
असत वस्तु की तो सत्ता ही नहीं बल्कि सटका कभी अभाव नहीं होता अतः दोनों ही अवस्थाओं में सत्य की उपस्थिति विद्यमान रहती है l गीता की बात को प्राचीन विचारकों में विख्यात जगद्गुरु शंकराचार्य ने इस प्रकार स्पष्ट किया है**, या दिव्या बुद्धि ब्याव चरित तत्सत**,अर्थात सत्य वह है जिसके विषय में हमारी बुद्धि परिवर्तित ना हो जिस का जो रूप निश्चित है उसके रूप में कोई परिवर्तन ना हो l
लोकमान्य तिलक के अनुसार सास्वत अस्थाई रहने वाला जिसका कभी कोई अभाव ना हो,अथवा तीनों काल भूत भविष्य तथा वर्तमान में जिस का अभाव ना हो वही सत्य है l इसके सत्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता l स्वामी जी ने सत्य को परिभाषित करते हुए कहा है कि, सत्य वह है, जो कालांतर में भी अन्यथा संज्ञा प्राप्त नहीं कर सकता है अतः स्वामी जी ने सत्य को प्परिभाषित करते हुए कहा है कि, जो देश काल और कार्य कारण से भेदा ना जा सके वही सत्य है l ऐसे विचारों के कारण ही स्वामी विवेकानंद जी का दार्शनिक चित्रण ब्रह्म अथवा सच्चिदानंद की धारणा के आसपास घूमता हुआ प्रतीत होता है l उनका मानना था कि ब्रह्म स्वयम एक स्वयंभू है l उसका कोई न कोई एक कारण है, ना उसमें देश है ना काल है और ना कार्य कारण है l वह एकमात्र असद की सत्ता है, और केवल उसी का अस्तित्व है , ब्रह्मा के अस्तित्व हर एक पदार्थ का अस्तित्व उसी मात्रा में है l जिस मात्रा में वह सत्ता का प्रतिनिधित्व करता है l उसके विचार से ब्रह्मा ही एकमात्र सत्ता है, और वही एकमात्र सत्य प्रकाशित चेतना ज्योति है l प्रत्येक पदार्थ उसी से उधार ली हुई ज्योति से प्रकाशित हो रहा है l
स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार स्वामी विवेकानंद जी ने अपने ज्ञान को परिभाषित करते हुए कहा है कि , आत्मा न तो नाशवान है ना भविष्य है, उससे अनंत गुना ऊंचा स्थान निर्गुण सत्ता का है l उन्होंने स्पष्ट किया है कि बुद्धि उस निर्गुण सत्ता को इस विश्व की सृष्टि पालनहार शासक तथा संघारक के रूप में उसके उपादान और निमित्त कारण के रूप में परम शासक के रूप में जीवन में प्रेम में परम सौंदर्य भाव के रूप में ऊर्जा प्रदान करती है l
अपने व्याखान मे उपनिषदों के वाक्यों का समर्थन करते हुए उन्होंने कहा कि, वह जो उसकी आत्मा का सार है l वही सत्य है वही आत्मा है तुम वह हो जो धूमकेतु की तरह इस नक्षत्र के सितारे हो l अर्थात इसका अर्थ यह है कि तुम ही ईश्वर हो l अद्वैत वेदांत के अनुसार, उन्होंने ब्रह्म कोई निरपेक्ष निर्देशित और निर्गुण सत्ता को स्वीकार किया है l और यही बात उसके दर्शन का सार तत्व है
ईश्वर के स्वरूप को भी स्वामी विवेकानंद जी ने अपने अनुसार चिंतन में स्पष्ट किया है l उन्होंने शंकराचार्य की भांति ईश्वर को समग्र संसार का स्वामी और कर्म का फल दाता माना है l पर ब्रह्मा के विपरीत परब्रह्मा के ईश्वर सगुन और ईश्वर के साकार की सत्यता को स्वीकार किया है l उनके अनुसार ब्रह्म अपनी वास्तविक प्रकृति में शुद्ध अशुद्ध तथा शुद्ध चित्त तथा ईश्वर की दो प्रकृति या जिन पर व शासन करता है l एक तो जीवन की और दूसरे संसार की रचना करने वाले माया की परिकल्पना की गई है l वह सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान और समग्र संसार के उद्भव पालन और प्रलय का करता है l उसे ज्ञान प्राप्त करने के लिए किसी इंद्रिय की तथा कार्य करने के लिए किसी शरीर की आवश्यकता नहीं होती l सार रूप में आदि ब्रह्मा है l जिसकी परिकल्पना स्वामी जी ने अपने दर्शन में की है l

स्वामी जी ने कहा है कि आत्मा न कभी आती है ना जाती है , यह ना तो कभी जन्म लेती है और ना कभी मरती है, प्रकृति ही आत्मा के सन्मुख गतिशील है, और इस गति की छाया आत्मा पर पड़ती रहती है l भ्रम वश आत्मा जब तक सोचती रहती है l तब तक वह बंधन में रहती है किंतु जब से यह पता चल जाता है कि, वह सर्वव्यापी है तो वह मुक्त का अनुभव करती है l विवेकानंद जी ने आत्मा को एक निराकार चेतन और वस्तु कहा है जो सर्वव्यापी कहा है वह शाश्वत है

स्वामी जी ने अपने सत्कार्य बात को स्वीकार किया है l उनका कहना है कि कारण और कार्य दोनों अभिन्न है l कार्य केवल कारण का रूपांतर मात्र है l अतः यह समुदाय ब्रह्मांड शुन्य से उत्पन्न नहीं हो सकता l बिना किसी कारण के वह नहीं आ सकता है इतना ही नहीं कारण ही कार्य के भीतर सूक्ष्म रूप से विद्यमान रहता है l सत्कार्य बाद में भी विवेकानंद ने बौद्धिक आतंकवाद की उपस्थिति को स्वीकार किया है l

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विवेकानंद जी ने सृष्टि की उत्पत्ति के जिस क्रम को स्वीकार किया है। वह सांख्य दर्शन से अधिक समीप है। समस्त जड़ पदार्थों का मूल उपादान करण आकाश तत्व है। और समस्त शक्तियों का मूल स्रोत प्राण है, और आकाश तथा प्राण की व्यूत्पत्ति ज्ञान की महत्व से हुई है।

स्वामी विवेकानंद जी समन्वयवादी विचारधारा को अपनाते हुए कहते हैं कि, जड़ शक्ति मन सूर्य अथवा अन्य दूसरे नाम से परिचित विभिन्न वैश्विक शक्तियों का उस विश्वव्यापी से ही अभिव्यक्ति का माध्यम है। सब कुछ स्वयं प्रभु की कृपा है। वह जगत का उपादान और निमित्त कारण है। जो कम संकुचित होकर वही विचार का रूप धारण कर लेता है फिर वही क्रम विकसित होकर पुनः ईश्वर बन जाता है यही सब जगत का रहस्य है।

दार्शनिक विचारों में स्वामी विवेकानंद जी ने माया पर अपने विचार व्यक्त किए हुए हैं। माया शब्द का प्रयोग साधारण रूप में भ्रम भ्रांति अथवा इसी प्रकार के अन्य अर्थों में किया जाता है। माया वेदांत का एवं विवेकानंद के दर्शन का एक प्रमुख संप्रत्य है। जिसमें अद्वैत वेदांत के समान स्वामी जी की माया को सर्व अनिर्वचनीय कहा गया है। माया के विषय में न तो यह कहा जा सकता है कि उसका अस्तित्व नहीं है, क्योंकि उसी के समस्त भेद उत्पन्न किए गए हैं, और इसके विषय में यह कहा जा सकता है कि उसका अस्तित्व है क्योंकि वह सदैव दूसरे पर ही आश्रित रहती है।

विवेका नंद जी के शिक्षा संबंधी विचारों की दार्शनिक पृष्ठभूमि :

धर्म के स्वरूप की इतनी निरपेक्ष एवं व्यापक भूमिका आज तक किसी ने नहीं सुना था। सनातन हिंदू धर्म इतना व्यापक उद्देश्य लिए हुए है कि, समूची मनुष्य जाति का हित तथा सही दिशा में विकास की संभावना इस धर्म में अंतर्निहित है। यह सच तो सनातन धर्म के बहुसंख्यक अनुयाई हिंदुस्तानी भी शायद या नहीं जानते थे। पश्चिमी समाज ने स्वामी जी के मुख से धर्म की ऐसी व्याख्या सुनी तो वह वाह-वाह कर उठे। स्वामी जी की प्रशंसा में इतनी तालियां बजे कि स्वयं स्वामी जी भी चकित रह गए थे।

स्वामी जी के जीवन दर्शन पर वेदांत दर्शन का काफी प्रभाव दिखता है। उन्होंने वेदों का गहन अध्ययन किया था। जिससे उनके जीवन में वेद की शिक्षाओं का बड़ा ही सार्थक प्रभाव पड़ा। वेदांत का अर्थ है वेदों का अंतिम चरम लक्ष्य, वेद दो भागों कर्मकांड तथा ज्ञान कांड में विभाजित है। कर्मकांड में संस्कार और यज्ञ के नियम है। जबकि ज्ञान कांड में धर्म का आध्यात्मिक पक्ष है। उन्होंने जीवन के दोनों भागों कर्मकांड और ज्ञान कांड को अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया है, वेदांत को हिंदुओं ने अपने मूल धर्म के ग्रंथ के रूप में स्वीकार किया है, और स्वामी जी तो हिंदू धर्म के एक कट्टर समर्थक के रूप में विख्यात हुए। उन पर वेदांत दर्शन का इतना ज्यादा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने तो यहां तक कह दिया कि हिंदू धर्म कहने से हम लोगों का वही अभिप्राय है, जो वास्तव में वेदांती का है। स्वामी जी के जीवन में वेदांत का जो सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ा वह अद्वैत वेदांत का है। इन प्रभाव के कारण उनको एक प्राकृतिक वेदांत भी कहा गया। वेदांत दर्शन के प्रभाव में ही स्वामी जी के धार्मिक तथा दार्शनिक आधारों का निर्माण किया। उनका दार्शनिक सिद्धांत व्यावहारिक वेदांत कहलाया। वेदांत के सिद्धांत से सभी व्यक्ति मूलतः ब्रह्म स्वरूप होने से एक है उनमें सभी लोगों के प्रति प्रेम सभी धर्मों के प्रति समान आदर भाव को उत्पन्न किया वास्तव में वेदांत दर्शन ही उनके धर्मनिरपेक्ष के रूप में अभिव्यक्ति होता है।

स्वामी जी पाश्चात्य दर्शन प्रणाली दार्शनिक विधि तार्किक तथा बौद्धिक विवेचना से बहुत आधा अधिक प्रभावित थे। उनकी मान्यता थी कि तार्किक दृष्टि से संतुष्ट ना हो जाए जब तक किसी भी बात का विश्वास आंख मूंदकर नहीं किया जाना चाहिए। यही कारण है कि वह प्रायः अपने गुरु को रहस्यमई अनुभव की बातों पर संदेह किया करते थे। अपने गुरु में भी उन्होंने तभी विश्वास किया, जब स्वयं उन्होंने इसकी आत्मानुभूति कर लिया। स्वामी विवेकानंद जी के जीवन पर अनेक धर्म तथा दार्शनिक विचारों का प्रभाव पड़ा। उनमें उनके जीवन में सबसे अधिक जिसका प्रभाव पड़ा वह हिंदू धर्म था। ईसाई धर्म के प्रभाव से हिंदू धर्म को बचाने के प्रति वह इतने सचेष्ट हुए। उनके जीवन में हिंदू धर्म के साथ-साथ बौद्धिक इस्लाम इत्यादि धर्मों का विशेष प्रभाव पड़ा। इन सब धर्मों में विशेष रूप से बौद्ध धर्म बहुत अधिक प्रभावशाली रहा। उन्होंने कहा है कि, हिंदू धर्म बौद्ध धर्म के बिना नहीं रह सकता न बौद्ध धर्म हिंदू धर्म के बिना रह सकता है।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जीव ईश्वर और ब्रह्मा

- **ईश्वर** व्यक्तियों व्यक्तियों की सर्वोच्च सत्ता को समझता है, और साथ ही वह एक व्यक्ति भी है ठीक उसी प्रकार जैसे कि मानव शरीर इकाई होते हुए भी कोशिकाओं रूपी अनेक व्यक्तियों का बृहत् रूप है l
- ईश्वर का अस्तित्व जीव के अस्तित्व पर ही निर्भर है
- जीव और ईश्वर सापेक्षिक सत्ताए हैं, ईश्वर सर्वव्यापी सर्वसुख, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है l ईश्वर ईश्वर सर्वव्यापी सर्व सुख सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है l
- जगत और ईश्वर सापेक्षिक सताए हैं l
- ईश्वर जगत का सूक्ष्म रूप है, तथा जगत ईश्वर का स्थूल रूप है l जीव ब्रह्म का ही अंश है l
- ब्रह्म विश्व की सृष्टि स्थिति तथा प्रत्यय का कारण है अतः कार्य की निष्पत्ति के लिए कारण का विद्यमान होना अनिवार्य है l
- ईश्वर ही सभी संस्थाओं का सर्व प्रमुख सर्व द्दष्टा है l इसके बिना इस किसी की कृपाल परिकल्पना करना संभव नहीं है यह कहा जा सकता है l

आत्मा:

1. आत्मा का स्वभाव चंचलता का है आत्मा स्वभाव रूप में शुद्ध और पूर्ण है l
2. आत्मा का स्वभाव ईश्वर से परे है l
3. आत्म सास्वत एवं अविनाशी है l
4. आत्मा का अंतिम लक्ष्य मुक्ति है l
5. आत्मा का वास्तविक स्वरूप है l
6. आत्मा निराकार है l
7. आत्मा अजन्मा है l

स्वामी विवेकानंद जी आत्मा और उसकी मुक्ति की क्या किया की व्याख्या

- ईश्वर आराधना इस प्रकार करते हैं की कर्मों में ही उसका गुणगान होनी चाहिए , अर्थात निष्काम भाव से कर्म करना चाहिए l
- कर्म योगी को दाता के रूप में कार्य करना चाहिए l
- सामान्य वर्गों को भी गिड़ा भाव से नहीं देखना चाहिए l
- कर्मयोगी के लिए सतत कर्म शीलता आवश्यक है l

स्वामी विवेकानंद के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धांत

- शिक्षा ऐसी हो जिसमें बालक का शारीरिक मानसिक आध्यात्मिक विकास हो सके l
- शिक्षा के द्वारा बालक के चरित्र का निर्माण हो मन का विकास हो बुद्धि विकसित हो तथा बालक आत्मनिर्भर बने l बालक बालिकाओं दोनों को समान शिक्षा देनी चाहिए l
- धार्मिक शिक्षा पुस्तकों द्वारा ना देकर आचरण एवं संस्कारों द्वारा देनी चाहिए l पाठ्यक्रम में लौकिक एवं पारलौकिक दोनों प्रकार के विषयों को स्थान देना चाहिए l
- शिक्षा गुरु गृह में प्राप्त की जानी चाहिए l शिक्षक एवं छात्र का संबंध अधिक निकटतम से निकटता का होना चाहिए l सर्वसाधारण में शिक्षा का प्रचार प्रसार किया जाना चाहिए l देश की आर्थिक प्रगति के लिए तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ही दिया जाना चाहिए l
- मानवीय एवं राष्ट्रीय शिक्षा परिवार से ही शुरू की जानी चाहिए l

इस प्रकार विवेकानंद के विचारों की प्रासंगिकता को देखा जाए, तो निश्चित रूप से स्वामी विवेकानंद जी ने अपने दार्शनिक और शैक्षिक विचारधारा को एक उत्कृष्ट पहचान दिया जिसकी वजह से आज संपूर्ण भारत में उनका दर्शन के क्षेत्र में एक आदर्श है l

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संदर्भ ग्रंथ सूची

अग्रवाल, जी.सी. (1994) लैंड मार्क इन द हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न इंडियन एजुकेशन, विकास पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।
कमल एम.पी.(2010) स्वामी विवेकानंद राजश्री प्रकाशन, नई दिल्ली।
डॉ. सुबोध अदावल (1957) भारतीय शिक्षा के सिद्धांत, गर्ग ब्रदर्स स्टैनफोर्ड प्रकाशन, प्रयाग।
देसाई ए. आर.(1976) भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, नई दिल्ली।
गुप्ता आरती (1985) स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन,पीएच.डी थिसिस इन एजुकेशन, रुहेलखंड विश्वविद्यालय बरेली।
जोशी इलाचंद्र(2010) स्वामी विवेकानंद राजश्री प्रकाशन, नई दिल्ली, l

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies